

DPN 6744

Title : नवग्रहार्चनविधि / NAVAGRAHĀRCANA VĪDHI

Run. No. 7469

Cat. No.

Micro. No.

Subject Karmakāṇḍa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.8 x 7.8

Folios 8

Lines (in a page) 8 / 18

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1. इति नवग्रहकलाशास्त्रः समाप्तः ॥ शुक्रस्तु सर्वजगतां ॥
2. इति धेनुशिवन्दः सम्पूर्णः ॥
3. इति व्यासेनोक्तं नवग्रहस्तोत्रं समाप्तं ॥

20

15

10

5



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ शंकराय नमः श्रीगणेशाय ॥
 प्राचीं शुक्रदिमीं शुभं मित्रं व
 नयां शुक्रं सैमिं नैमं व
 वसन्ति वाहनं विष्णो वाहनं
 गगना ॥ वायव्यं किल कंठं व
 रुद्रं गुप्तामी गगनमिन्द्रात्मयं
 जन्मं धनुर्गोमया ध्वनि
 कटमं ध्वसदासु स्वरं ॥

यजमानं नयस्य राजर्नकाय
 ॥ ग्रायादियत्तं ॥ वाक् ॥ यज
 मानस्य ग्रायं ककार्यं मृदायाम
 वयस्य ननिमित्ता ॥ ध्वजयस्य
 राजर्नं समर्थयामि ॥ ॐ नमान
 वयसाय ॥ ग्रादिह्यः ॥ श्रीमद्
 लावधुर्गुः ॥ शुक्रं शनिं ग्रासन
 ॥ कुरुयस्य दश ॥ विधानकथि
 या ॥ ग्रास्तिर्गजानि ॥ रावर्ग
 ववज्जन्मक ग्रासरुत्तानि ॥

व्यपृष्टिं यनानी त्वानस्य नव
 यदाशुरुत्तारुत्तारुत्तारुत्तारु
 दिना ॥ वस्त्रं मृता निमित्तं यना
 नका विरान ॥ १॥ श्रीरुमिसु
 वधं ॥ जावादिशुक्रं ॥ १॥ नि
 नारु कंठं ॥ सर्वं यदाशानिक
 नाशुनित्यं ॥ सिद्धिं वसुधिया
 रुत्तादि ॥ यथावानस्य दानार्थं ॥

व्याघ्रं धनसूयार्थं न्यासी कृत्वा ॥
 ग्रायं यजुः पूजा ॥ ग्रास्य पूजा ॥ ग्रा
 सनयुर्वदत्ता ॥ ॐ नत्ताजामि ॥
 ॐ दवस्य त्वामविशुद्धा ॥
 ॐ गगनां त्वा ॥ ॐ वृद्धस्य न ॥
 ॐ वत्ता विष्णुं गगनया ॥ ॐ दानादवा ॥
 ॐ दिव्यं गुरुं ॥ ॐ सयजवयः ॥
 ॐ वत्ता जज्ञानं ॥ ॐ विष्णुं वत्ता ॥
 ॐ नमः ॥ १॥ वत्ता ॥ दानार्थं ॥
 ॐ ग्राजिघ्रकलसी ॥ ॐ यवनशः ॥

ॐ नमो भगवते ॥ ॐ सितासित ॥
ॐ उदय ॥ ॐ वाहनादि ॥

[illegible]

शामायड मायक्रायऽययि

ॐ पं दी पं नमः

५१

[illegible]

मूमा वायस्क न्यायद्विनिष्ठ
 धिदवताय ०० दमासनीशाय
 ध्यान ॥ वक्रमाल्यामवधवध
 धाकि मूलगदाधवध ॥ वक्रुज
 मधगमावधवध ॥ म्याद्रनासूतध
 मूमावायध्यानयूष्यश ॥ वंद ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ यदकच ॥
 ॐ शानाये धि विभा ॥ श्रीवा नादि ॥
 ॥ नेक सर्वयत्री हि पारं नमः ॥
 सुतादनने वयं नमः ॥ जाय
 म्भ ॥ किमिय ॥ कि कि क्मा
 निष्ठा वाटा मुस म्भुवः ॥ रु
 नद्वाजक मानस्य मङ्गला ॥ य
 नमा मुन ॥ श्रीमान् यद्वा न वि
 भनत्सर्व यनि पूर्व म्भु ॥

वृथा यना नाय नाय विष्णु ॥ ५
 ल्यधिद वगाय ॥ द मा से नै ॥
 यर्थनमः ॥ ॥ ॥ पीत मा ल्या
 म्भ न व ॥ कर्त्तु का न द ल ॥
 मि ॥ खद्ग व म्भ ग द या सि ॥ सि
 रु स्त्री व व द ॥ व ॥ व ॥ य ॥
 न यर्थनमः ॥ ॐ उद्वा स्था ॥ न ॥
 ॐ विष्णु व नाटा ॐ ॥ ॐ ॥ विष्णु ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 द भिरु क्ते नै ॥ यं नमः ॥ जाय स
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वृहस्पतय वक्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 विदय नाय ॥ द मा से नै नमः ॥
 यर्थनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ना वार्थ रू द ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 श्रीकारु य व उ वी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 व न ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यर्थनमः ॥ ॐ वृहस्पतय ॥

ॐ श्री वृद्ध ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 श्रीवा नादि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जवान्न घृ न मिथ ने वयं नमः ॥ न
 जाय म्भ ॥ सि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 भिद व द व ॥ विष्णु जाति न मा
 मुन ॥ वृहस्पतय द्वा न वि ॥
 नत्सर्व यनि पूर्व म्भु ॥ ॥

शुक्राय शक्राय सती ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शिवस्यैव हि सत्यं ध्यातव्यं नैव
 सुखं न क्लेशं विविधां वाच
 रुमिनाम् ॥ अथ याति मनीषी
 यतिगतेनेव यच्छीवान् नैव
 तिस्र्यग्रदयाति यश्च सद्विदो
 भिसदाश्चान्तिं यच्छीवान् ॥

यम्भान्॥ अम्लजम्भसंकल्प॥
 दन्तम्भान्॥ कलम्भान्॥
 दन्तम्भान्॥ वलिम्भान्॥
 यम्भान्॥ यम्भान्॥ कलम्भान्॥
 वन्द्यादिमन्त्रान्॥
 यम्भान्॥ यम्भान्॥ यम्भान्॥
 यम्भान्॥ यम्भान्॥ यम्भान्॥
 यम्भान्॥ यम्भान्॥ यम्भान्॥
 यम्भान्॥ यम्भान्॥ यम्भान्॥

१५॥ दिव्यादिनवग्रहशानमः ॥

20

15

10

१ॐ नमः॥ सामा य॥ वयं० सामा वृत्तं तव मनसूय विभु गथा वृत्ता वन॥ वमदि॥
 ॥१॥ शुक्लं शुक्लं शुक्लं शुक्लं मि वरु केरुं॥ मृगं मृगं मृगं॥ मृगं मृगं मृगं॥ मृगं मृगं मृगं॥
 द्योतिनयससूनुवसियुजायनं वरुं॥ यनमं यनमं॥ यनमं यनमं॥ यनमं यनमं॥ यनमं यनमं॥
 धयमा॥२॥ सामं यवतं सामं यवतं॥ सामं यवतं॥ सामं यवतं॥ सामं यवतं॥ सामं यवतं॥
 नाययवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥
 संहृताययवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥
 ॥३॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥
 कुरु कुरु यामिवा नंदं वीरुमा॥ सामं यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥ यवतं॥

वज्र

5

वनं दद्यात् काम्यं वरुं॥ अगदिनिसवस्वनि॥ विविदि॥१॥ गगं गगं॥ गगं गगं॥ गगं गगं॥ गगं गगं॥ गगं गगं॥
 दवशा मासु र्गं वृत्ता॥१॥ कुरु० वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥
 वृत्ता॥१॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥
 मितमेतं सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥ सामं॥
 वृत्ता॥१॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥
 वानां विरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥
 वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥
 वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥
 वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥ वरुं॥

मि२

[illegible]

मस्य त्वाद्यभ्रनारिषिकैः। मयत्नरुजसासूर्ये सवर्द्धसदृशं लिये॥ कृ
जीकुरु यतिर्वधं किदिअन्यादि॥ १३॥ नूनये गृहयतय स्वादा सोमाय व
लम्यतय स्वादाम नूनाभाज संखा दौ नृथं लि माय स्वाहा॥ एधि विमानम्मा
माहि० सोमो मृदे त्वामा॥ १४॥ चतुमाग्रस्वन नास्यत्पूर्णावक दिवि॥ नयि
म्यिशन्न वदूलीयू रस्य रु० हविर्वतिक निजगत॥ १५॥ सामो धनं सु सामा अ
र्वक मागु० सामा वीलीकर्म चन्दानि॥ सादन्ये द्विदथा० सरुर्ययितु ग्रव
लीयाद दागदसो॥ १६॥ तिषाठम्यदु० सीपूल् ८॥ १७॥ चडा यनेम॥ ३९

पापघ्नं धनं नमामि दिवाकरं ॥ १ ॥ दधि शीखंडवा नारुं को नाया कूवं समुर्वं ॥ नमा
मि शिनि नंदवं शिभर्म कूटखलमं ॥ २ ॥ धन्या गरुं संहृतं विग्रहं जहं स
मं ग्रहं ॥ को मा वं शि किहं स के शं ग वं यन म्यहं ॥ ३ ॥ धियं यु कलिका श्यामं व
यं प्रतिहं विहं ॥ सोम्या सोम्य गुणाय नं नमामि शिनि नंदं ॥ ४ ॥ दवानां
के मघीना के युवं का के न सन्निहं ॥ वयं मूर्ति तिला कं म्यनमामि वृहस्प
ति ॥ ५ ॥ हिमं कूटं घना लारुं देव्या नीय न मं युवं ॥ सर्वं शं म्युवका नं रा
जं वं यन माम्यहं ॥ ६ ॥ नीलांशुं न निहं द हं न विग्रहं मदाग्रहं ॥ कृपायाग

रुं संहृतं युलमामि शिने श्ववं ॥ ७ ॥ मद्रकार्यं मदावीर्यं के द्यादि यमदं के ॥
सीहिका गरुं संहृतं नाद्रं नित्यं नमाम्यहं ॥ ८ ॥ यलालधूमसंकाशं नाग्रहं
नमस्कृतं ॥ योदा योदात्मकी धानं लीकं तु यनमाम्यहं ॥ ९ ॥ शुक्रं रात्रं स
काशं सर्वं दवे नमस्कृतं ॥ सर्वं ये सर्वं दवानी ज नंदवं नमाम्यहं ॥ १० ॥ उ
दं स्रुवं व्यासनाकं य पठिष्यन्ति मानवाः ॥ दिवा वाय दिवा नाशे सभष्विस
मष्वं ॥ ग्रहियार्थं मिच्छार्थं नवग्रहं सन्नतं ॥ सूर्यातामु सदा कालं पीठ
दं द्रव्यपादु ॥ १२ ॥ इति व्यासनाकं नवग्रहं स्तुतं समाप्तं ॥ ॥ गुरुं ॥